स्वर्णिम प्रभात का आगाज है, 'शिवरात्रि का पर्व'

भारत तथा पूरे विश्व में मनाये जाने वाले पर्व, अतीत में हुई ईश्वरीय और दैवीय महान घटनाओं के यादगार है। सभी पर्वों के अपने-अपने महत्व है, परन्तु कुछ ऐसे महापर्व होते हैं जो सृष्टि तथा मानव जीवन को नयी सुबह और स्वर्णिम अवसर प्रदान करते हैं। इन पर्वों में महाशिवरात्रि का पर्व सर्वश्रेष्ठ है। यह महापर्व आत्मा और परमात्मा के मिलन का सुखद संयोग, रात्रि से निकल प्रकाश में जाने तथा अज्ञानता से परिवर्तन होकर सुजानता की नयी सुबह की दुनियां का आगमन होता है। सर्वआत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव की महिमा अपरम्पार है। परन्तु मानव जगत में इनके नाम में रात्रि शब्द जुड़ा होता है। सर्व मनुष्यात्माओं को अज्ञानता की रात्रि से निकाल सोझरे की दुनियां में ले जाने वाले पापकटेश्वर, मुक्तेश्वर भगवान शिव के नाम में लग रात्रि का गहरा अर्थ है। वैसे भी रात्रि का अर्थ केवल 24 घंटे में आने वाली रात्रि ही नहीं बल्कि पूरे सृष्टि चक्र में आधा कल्प तक आयी अज्ञानता की रात्रि का भी द्योतक है। प्रतिदिन आने वाली रात तो मनुष्य के तन और मन को शान्ति प्रदान करती है, जिसमें मनुष्य अपनी थकान और भौतिक शरीर को आराम देता है। परन्तु मनुष्य के मन और विचारों में आयी अज्ञानता की रात्रि से आत्मा को तभी आराम और सुख चैन प्राप्त होता है, जब मुक्ति दाता परमात्मा की शक्ति से अज्ञान अंधकार दूर होता है।

देवों के देव महादेव परमात्मा शिव की महिमा काशी से काबा तक विभिन्न रूपों में गायी और पूजी जाती है। शिवलिंग के रूप में परमात्मा की यादगार पूरे विश्व में पूजी जाती है। अनेक धर्मों और पंथो में भी निराकार परमात्मा शिव विविध रूपों में स्वीकार्य हैं। अज्ञानता की रात्रि ने मनुष्य को परमात्मा के वास्तविक सच्चाई से दूर कर दिया है, इसलिए तो मुक्तिदाता को अज्ञानता की रात्रि में आने की आवश्यकता होती है। वास्तव में अज्ञानता की रात्रि ऐसी रात्रि होती है जिसमें मनुष्य रिश्ते, नाते, अलौकिकता को भूल जाता है, और मानवीय मूल्यों को तिलांजलि दे देता है। पूरी दुनियां में सर्वश्रेष्ठ समझे जाने वाले मनुष्य रूप में मानव नहीं बल्कि दानवी रूप को धारण कर लिया है। अज्ञानता की रात्रि की वजह से सर्व मनुष्यों के अन्दर आसुरीयता घर कर जाती है। फिर पूरी दुनियां में अत्याचार, भ्रष्टाचार, पापाचार, बालात्कार, हिंसा आदि का राज्य हो जाता है। दैवी गुणों की जगह मनुष्य आसुरी वृत्तियों से भरा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की सीढ़ियों पर चढ़ भौतिक सत्ता के बल संसार में तबाही मचाना अपना कर्त्तव्य समझता है। यह घोर अज्ञानता की रात्रि का घोतक नहीं तो और क्या है। यह ऐसा वक्त है जब मनुष्यों की आस्था और विश्वास के सर्वोच्च स्थान मंदिर, मस्जिद और अन्य पवित्र स्थानों पर अन्याय, हिंसा, अत्याचार और लूटपाट करने से भी लोग नहीं हिचकते हैं। इस घोर अज्ञानता की रात्रि में दानवी प्रवृत्तियां मानवता को कुचल देती हैं।

ऐसा चिन्ह पूरी सृष्टि के बदलने का संकेत होता है। समयानुसार इस सृष्टि का परिवर्तन होना ईश्वरीय संविधान का अटल सत्य नियम है। चारों युगों से बनी इस सृष्टि का कलियुग, सृष्टि चक्र की अंतिम अवस्था होती है। इस घोर अज्ञानता की रात्रि वाले समय कलियुग के आदि और सतयुग के प्रारम्भ में सृष्टि के जगत नियंता, सर्व आत्माओं के पिता विश्वकल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव का अवतरण होता है। बूढ़े नन्दी बैल अर्थात मनुष्य के साधारण तन का आधार लेकर इस पूरी दुनियां का महान

परिवर्तन करने का महान कार्य करते हैं। अज्ञानता की रात्रि को मिटाकर आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति से स्वर्णिम दुनियां की स्थापना का महान कार्य करते हैं। इसी का यादगार शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है।

फाल्गुन मास के अंत में मनाये जाने वाला शिवरात्रि का पर्व नयी सुबह लेकर आता है। इस पर्व का समय के हिसाब से विश्लेषण करें तो भारतीय महीने के अनुसार यह वर्ष का अंतिम महीना होता है। इसके बाद प्रकृति के तत्व भी अपना कलेवर बदल कर सुखदायी हो जाते है। जिसे बसंत ऋतु कहते हैं। यह सभी ऋतुओं में सबसे सुन्दर और सुखदायी ऋतु होती है। पेड़ पौधें भी अपनी पुरानी पत्तियों को छोड़ नयी पत्तियां धारण कर लेते हैं। धरती भी अपने गर्भ से सुगन्धित पुष्पों को जन्म देकर चारों तरफ खुशहाली और सदभावना का संदेश देती है। भगवान शिव जब अज्ञानता की रात्रि अर्थात कलियुग को बदल सतयुग की स्थापना करते हैं। उसका स्थूल यादगार यह शिवरात्रि का महापर्व है और सतयुग की महिमा का द्योतक है बसंत ऋतु।

परमात्मा का स्वरूप और उनकी यादगार: प्रसिद्ध धर्मग्रन्थों, मंदिरों, शिवालयों में शिवलिंग की प्रतिमा का ही अधिकाधिक वर्णन हैं। शिवलिंग की प्रतिमा प्राय: कालिमा लिये होती है। शिव का अर्थ कल्याणकारी तथा लिंग का अर्थ चिन्ह होता है। अर्थात कल्याणकारी परमात्मा शिव अज्ञानता की रात्रि में अवतरित होकर सभी मनुष्यात्माओं का कल्याण करते हैं। शिवलिंग पर बनी तीन लाईने तथा बीच में लाल विन्दू का चिन्ह परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य तथा उनके दिव्य रूप का प्रतीक है। तीन लाईने अर्थात ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा सृष्टि की पालना तथा शंकर द्वारा महाविनाश को रेखांकित करती है। इसके बीच में बने बिन्दू रूप अर्थात इन देवों के भी देव परमात्मा शिव का रूप निराकार ज्योतिबिन्दू स्वरूप है। इसकी महिमा आदि काल से लेकर अब तक सर्वाधिक मान्य और पूज्यनीय है।

स्वर्णिम प्रभात की आगाज की बेला: प्रत्येक मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि यह वक्त बदलाव का है। पुरानी दुनियां की अन्त तथा स्वर्णिम प्रभात की आगाज का शुभ संकेत है। अत्याचार के समाप्त होने तथा सदाचार की स्थापना की पहल का है। यह सर्व विदित है कि जब किसी भी चीज की अति हो जाती है तो उसका अन्त ईश्वरीय नियम है। आज समाज की और पूरी दुनियां की स्थिति भी ऐसे ही संकेत का प्रबल उदाहरण है। पूरी मानवता इस दुनियां से मिट चुकी है। आणविक हथियारों के ढेर पर सोयी इस दुनियां की अंतिम श्वांस है। प्रकृति के पांचो तत्व भी मनुष्य को सुख देने की असमर्थता जाहिर कर दी है। जिससे ग्लोबल वार्मिग, बाढ़, सूखा आदि परिवर्तन का प्रबल संकेत है। इस परिवर्तन की अंतिम बेला में स्वयं परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर नयी दुनियां के पुनर्निर्माण का महान कार्य कर रहे हैं। पूरे भारत तथा विश्व भर में मनाये जाने वाले महाशिवरात्रि के इस महान पर्व पर गुप्तरूप में महापरिवर्तन का कार्य करा रहे, परमपिता परमात्मा शिव को पहचान 'शिवरात्रि पर्व' अपने बुराईयों को स्वाहा कर दैवी गुणधारी बन नयी दुनियां की स्थापना के महान कार्य सहयोगी बनें। यही परमात्मा का सर्व आत्माओं प्रति शिवरात्रि का शुभ संदेश है।